

## पद २५०

(राग: काफी - ताल: दीपचंदी)

अजहुं न क्यों नहीं आयो कृपाधो । कौन दास तुमको  
भिरमायो ॥ध्रु॥ गज सुमरे तब धायो प्रभुजी । खगपति बेगिन  
पायो ॥१॥ द्रुपदसुता की राखी लाज प्रभु । लाखन चीर बढायो  
॥२॥ खंब फोड़ पहेलाद के कारन । नरसिंग रूप धर आयो ॥३॥  
मानिक कहे तोहे दरसन के कारन । हुलक हुलक जस गायो ॥४॥